अधुनातन व्याधियों के उपचार में ज्योतिष की उपादेयता

ज्योतिष शास्त्र व उसकी उपादेयता :- मानव जीवन व मानव शरीर एक जटिल पहेली है और प्रत्येक व्यक्ति अपने शरीर से सम्बंधित व्याधियों का रहस्योद्घाटन करना चाहता है, अतः वह भविष्य जानने के लिये उत्सुक रहता है, **"द्वितीयाद् वै भयं भवति"** सूत्रानुसार प्रायः प्रत्येक प्राणी में अपने शरीर की व्याधि से सम्बंधित जन्मजात असुरक्षा का भाव रहता है, निर्बल मानसिकता में यह भाव प्रखर रूपेण उपस्थित होता है।[1]

ज्योतिष परम पवित्र एवं दिव्य विद्या है, मानव जीवन से सम्बंधित सभी परिपेक्ष्यों में इसकी निहित आवश्यकता है। भारतीय मनीषा में यह विद्या मुक्ति के अर्थ में ग्राह्य रही है, **"सा विद्या या विमुक्तये"** वेद के षड्ंगो - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छण्द व ज्योतिष का अति महत्वपूर्ण स्थान सुरक्षित है। ज्योतिष वेदों के नेत्र के रूप मे वर्णित है। इस धरा की निर्मल पवित्रता का प्रमाण वेद हैं, जिनके अकृत्रिम निश्छल समाधि स्वरों मे निखिल-सृष्टि के तापत्रय निवारण की कामना का संकेत सर्वत्र उपस्थित है अतः इस पवित्र धारा में अभिन्न अंग रूप से ज्योर्तिविज्ञान का मर्म यदि समझने का प्रयास किया जाए तो चिकित्सा विज्ञान (अधुनातन व्याधियाँ) में ज्योतिष की उपादेयता स्वयं सिद्ध होगी, इसे ही Medical Astrology कहा गया है।

जिस प्रकार मानव शरीर अनेकानेक जन्मों के कर्म से ही जन्म लेने को बाध्य होते हैं, उसी प्रकार इन कर्मो द्वारा ही उन्हें अपने जीवन काल में अनेक शारीरिक व मानसिक व्याधियों को भोगने के लिये बाध्य होना पड़ता है। कर्म की व्याख्या के अनुसार कर्म तीन प्रकार के हैं -संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण। प्राणी के प्रथम जीवन के प्रारम्भिक कर्म से वर्तमान क्षण तक किये गये सारे कर्म संचित कर्म कहलाते हैं, संचित कर्मो का वह भाग जिसका भोग प्रारम्भ हो चुका है प्रारब्ध कहलाता है, आगे जो कर्म किये जाएंगे उनकी क्रियमाण संज्ञा हैं, ज्योतिष इन्ही संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण संज्ञक कर्मो की प्रवृतियों का क्रमबद्ध इतिहास सूचित करता है, प्रारब्ध कर्मानुसार ही व्यक्ति कुछ निश्चित सांसारिक प्रवृतियाँ लेकर एक स्थान एवं समय विशेष मे जन्म लेता है, तदनुरूप सुख-दुःखादि परिस्थितियाँ भोगता रहता है, इन्ही में विभिन्न प्रकार की व्याधियाँ सम्मिलित हैं।

---

1. अनिष्ट ग्रह चिकित्सा / पृष्ठ संख्या 1 / प्रका0 मेघ प्रकाशन / संस्करण 2001, दिल्ली

www.drjitendraastro.com

शास्त्र वचन है -

''येषां ये यानि कर्माणि प्राक् सृष्ट्यां प्रतिपेदिरे,
तान्येव प्रतिपद्यन्ते श्रज्यमानाः पुनः पुनः।।''[2]

अधुनातन व्याधियाँ व ज्योतिष शास्त्र (Medical Astrology)

1. कालपुरूष का निरूपण - दर्शन का एक सर्वमान्य सिद्धान्त है - **''यत् पिण्डे तत्ब्रह्माण्डे''** - जो पिण्ड (मानव शरीर) एवं ब्रह्माण्ड की एकरूपता निरूपित करता है, इस सिद्धान्त का ज्योतिषिय प्रतिपादन प्रस्तुत करते हुए आचार्य वराहमिहिर[3] समस्त ज्योर्तिमण्डल को कालपुरूष से सम्बद्ध करते हुए मानव के विभिन्न आयामों का उससे सीधा सम्बंध स्थापित किया है, जो सिद्ध करता है कि व्यक्ति रूपी यह इकाई उसी विराट् कालपुरूष का एक अभिन्न अंग है व उससे घनिष्ट रूपेण जुड़ा हुआ है, उदाहरणार्थ आचार्य वराहमिहिर ने सूर्य को कालपुरूष की आत्मा कहा है, ब्रह्माण्ड में यह विराट् आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है, जो केन्द्रक शक्ति है, निखिल सृष्टि को गतिदाता है, सविता है, व्यक्ति के पार्थिव शरीर में भी वही शक्ति विद्यमान है जिसे उसके जन्मांग में स्थित सूर्य व्यक्त करता है, चन्द्रमा कालपुरूष का मन है, मानवीय शरीर की भी समस्त मानसिकता जन्मकालीन चन्द्र स्थिति से अभिव्यक्त होती है, इसी प्रकार मंगल को सत्व, बुध को वाणी, गुरू को ज्ञान, शुक्र को काम, शनि का दुःख एवं द्वादश राशियों को कालपुरूष के विभिन्न अंग कल्पित करते है, जो इस प्रकार हैं -

''मस्तकममुखोरो हृदुदरकटिवस्ति
लिंगोरूजानुजन्गघांघ्रि मेषादितः कालागंम्।।''[4] यथा

अर्थात् मेष राशि मस्तक, वृष राशि मुख, मिथुन राशि मध्य स्तन भाग, कर्क -हृदय, सिंह-उदर, कन्या-कटि, तुला-वस्ति, वृश्चिक-लिंग, धनु-जंघा, मकर-घुटना, कुम्भ-पिण्डली एवं पैर मीन राशि द्वारा निरूपित होते हैं। कालपुरूष के अंग विभाग में जो राशि दीर्घ हो, वह अंग लम्बा तथा जिस राशि को पापग्रह पीड़ित करते हो उस राशि से सम्बंधित अंग में कष्ट होगा या पीड़ा होगी अर्थात् मानव अंगों में पीड़ा या व्याधियों का विचार कालपुरूष के अंग विभाग द्वारा ही किया जाता है।

ज्योतिष शास्त्र के तीन स्तम्भ हैं - सिद्धान्त, संहिता व होरा। होरा विभाग ही जन्मकालीन ग्रह नक्षत्र एवं राशियों की जन्मांग के द्वादश भाव में स्थिति से शुभाशुभ

---

2. अनिष्ट ग्रह चिकित्सा / पृष्ठ संख्या 1 / प्रका. मेघ प्रकाशन / संस्करण 2001, दिल्ली
3. वृहज्जातकम् / अ 2 / श्लोक संख्या 1 / पृष्ठ सं. 16 / प्रकाशक खेमराज श्री कृष्णदास / प्रकाशन 2005, मुम्बई
4. जातक तत्वम् / अ. 1/ श्लोक सं. 2/ पृ. सं. 1/ प्रकाशक पं. कान्तिचन्द्र पाठक, भुवनेश्वरी प्रिन्टिंग प्रेस, म.प्र./ प्रकाशन संवत् 2007

www.drjitendraastro.com

फलों का विस्तृत विवेचन करता है जैसे यदि किसी अवयव स्थित भाव में पाप ग्रह हो तो उस अंग में धाव या चोट आदि का चिह्न होगा। यदि ग्रह (शुभ या अशुभ) अपने राशि नवांश में हो तो उक्त चिह्न जन्म समय से ही होगा। इस प्रकार लग्नादि से अंग ज्ञान का प्रयोजन सिद्ध होता है, यदि स्वराशि या स्व नवांश में ग्रह न हो तो अपनी-अपनी दशा आने पर मानव शरीर पर व्याधि प्रकोप कर घाव आदि चिह्न करते हैं, ऐसा सत्याचार्य का वचन है -

''पापा व्रणं लाछनमेषु सौम्याः स्वांशे वराशावयवा स्थितेषु।
कुर्वन्ति जन्मोत्थितमेषु चिह्नमेषु ग्रहास्तद्विपरीतसंस्थाः।।''[5]

2. कालपुरूष में धातु निरूपण - मानव शरीर में प्रत्येक ग्रह किसी अंग विशेष व धातुओं को इंगित करता है।

अस्थिरक्तमज्जात्वगवसाशुक्रस्नायुनिसुर्यादीनाधातवः।।[6]

जैसे सूर्य ग्रह अस्थि (हड्डी) का, चन्द्र रूधिर का, मंगल ग्रह मज्जा (भीतर की पतली चमडी) का, बुध त्वचा का, गुरू चर्बी का, शुक्र वीर्य का, शनि नसों (स्नायु तंत्र) का आधिपति है, इनको ग्रहों की धातु कहा जाता है। उदाहरणार्थ किसी कुण्डली में कोई भी ग्रह अष्टम में हो या मृत्युकारक हो तो धातु के कोप से अंग में रोगादि पीड़ा उत्पन्न होगी तथा जातक का मरण भी हो सकता है क्योंकि कालपुरूष निरपेक्ष सत्ता है, वह किसी की उपेक्षा नहीं करता है, पर उसे किसी की अपेक्षा भी नहीं है, उस साम्राज्य में पक्षपात की संज्ञा ही निरर्थक है। मानव जीवन व उनके शरीर की व्याधियों के लिये ग्रह उत्तरदायी है, परन्तु यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि ग्रह किसी को सुख दुःख या शारीरिक व्याधियाँ प्रत्यक्ष रूप से नहीं देते हैं अपितु यह तो उनकी सूचना ही देते हैं **"फलानिग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिणः"** अतः यह स्पष्ट व सत्य है कि ग्रहों की रश्मियां मानवीय व्यवहार को प्रभावित कर तदनुरूप आचरण करने पर बाध्य करती हैं तथापि इसमें भी यह रहस्य अन्तर्निहित है कि हम अपने पूर्व कर्मानुसार ही उस समय एवं स्थान विशेष में रहने के लिए बाध्य होते हैं जहाँ इन प्रतिकूल रश्मियों का प्रभाव उस परिस्थिति को प्रकट करने में सहायक बनता है, उदाहरणार्थ लग्न व चन्द्र दोनों ही पापाक्रान्त या पापकर्तरी योग में हैं अतः इससे स्पष्ट है कि इन दोनों से सम्बंधित राशि व धातु प्रकोप जातक पर होगा इसमें उनके नवांश, नवांशपति व भावेश का सम्बन्ध स्थापित करके व्याधि व उस व्याधि का उपचार किया जा सकता है।[7]

---

5. सारावली/अ. 4/ श्लोक सं. 6/ पृ. 16/ प्रकाशक मोतीलाल बनारसी दास/ प्रकाशन सन् 2007, वाराणसी
6. जातक तत्वम् / अ. 1/ श्लोक सं. 47/ पृ. सं. 15/ प्रकाशक पं. कान्तिचन्द्र पाठक, भुवनेश्वरी प्रिन्टिंग प्रेस, म.प्र./ प्रकाशन संवत् 2007
7. अनिष्ट ग्रह चिकित्सा/ पृष्ठ संख्या 7/ प्रका. मेघ प्रकाशन / संस्करण 2001, दिल्ली

www.drjitendraastro.com

कुण्डली में अनिष्ट कारक स्थितियों से उत्पन्न व्याधियाँ :-

1. भावों से सम्बंधित अंग व रोग :- कुण्डली के 12 भावों मे यदि पुरूषाकृति के अंगो का विभाजन किया जाए तो प्रथम भाव मस्तक, द्वितीय भाव कंठ व नेत्र, तृतीय से कर्ण व हाथ (कंधे), चतुर्थ से जातक का हृदय, पंचम से उदर, षष्ठ से नाभि व गुर्दा, सप्तम से जन्नांग सम्बंधि बिमारी, अष्टम भाव से गुदा, नवम से जंघा, दशम से जानु, एकादश भाव से गर्दन व बांया हाथ तथा द्वादश भाव से पाद (तलुए) व वामनेत्र का विचार किया जाता है जो भाव या भावेश पापाक्रान्त होकर जिस भाव में विराजित है उस भाव से सम्बंधित अंग मे व्याधि होगी। भाव या व ग्रह कितना पापपीड़ित है उसकी गणना करने के पश्चात् ही व्याधि की अधिकता या न्युनता ज्ञात कि जा सकती है।[8] यथा -

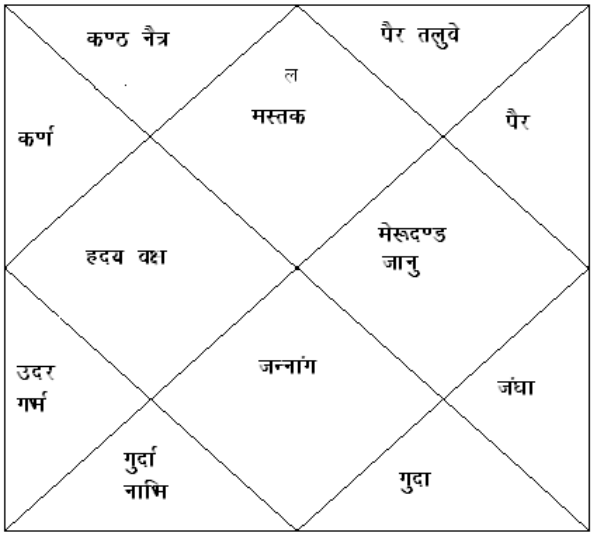

भाव व उनसे सम्बधित अंग

शिरोनेत्र तथा कर्णे नासा चाजि कपोलका
हनुमुखं तथा वाच्यं लग्नादाद्यदृकाणके।।
लग्नान्मध्यदृकाणे च कण्ठांशो बाहुकौ तथा।
पार्श्वे च हृदये क्रोडे नाभिं चैव यथाक्रमणू।।
वस्तिलिंगगुदे वृषणवूरू जानुजंघके।
पदेति चैव मुदितैवमिमंग तृतियके।।

उपरोक्त सारणी अनुसार अंग व उन अंगों से सम्बंधित रोगों का पता लगाया जा सकता है तत्पश्चात् उनका उपचार किया जा सकता है, क्योंकि द्वादश भाव में यदि पाप-ग्रह स्थित हो या ग्रहों की युति, प्रतियुति और दृष्टि हो तो शरीर के उन्हीं भागों मे पिड़ा या रोग होना निश्चित है।

---

8. वृहद् पाराशर हौरा शास्त्र/ अ. 16/ श्लोक सं. 19,20,21/ प्रका. श्री ठाकुर प्रसाद, वाराणसी/ वर्ष 2005

www.drjitendraa

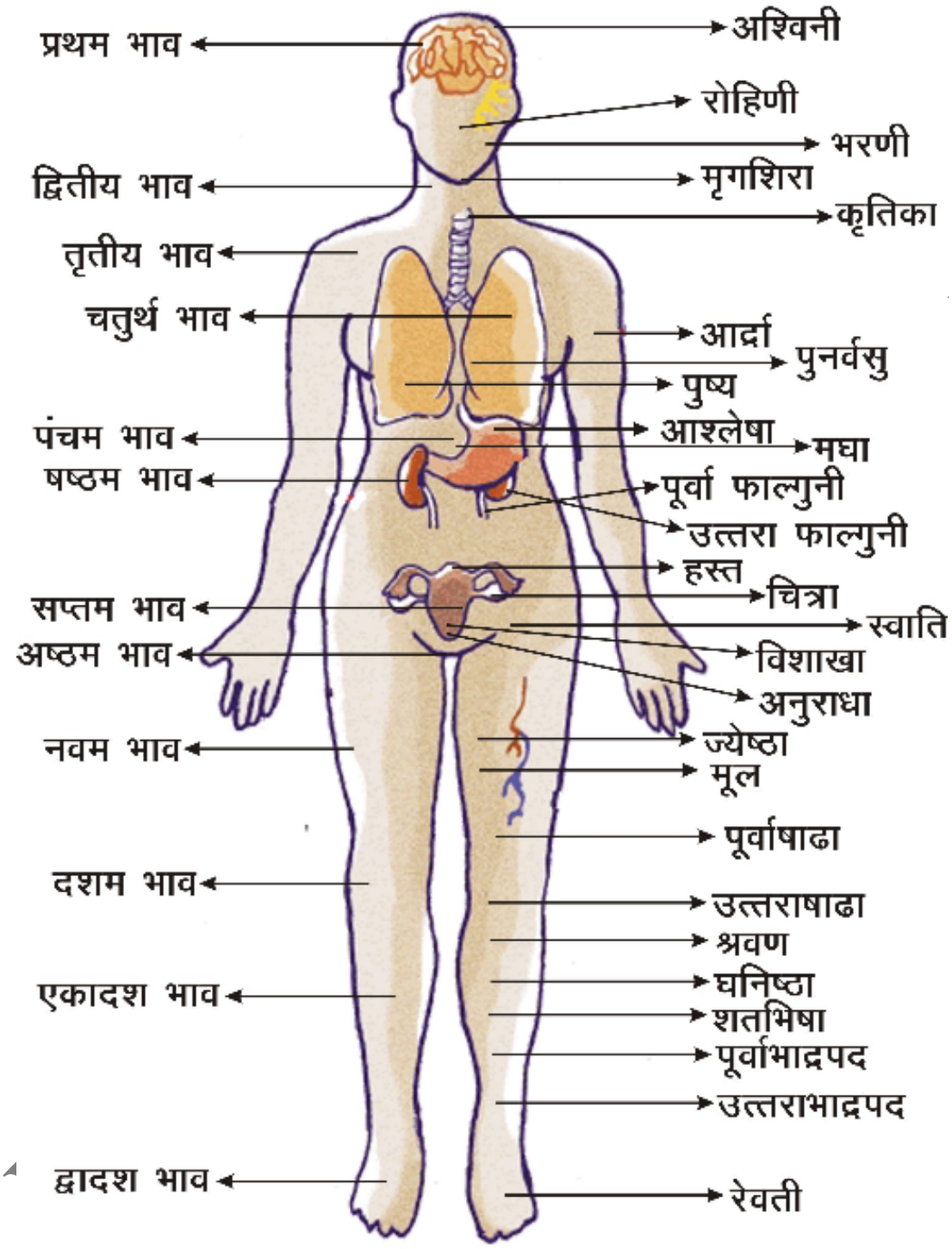

भावों व नक्षत्रों से सम्बंधित अंग

किसी जन्मांग, प्रश्न कुण्डली या गोचर कुण्डली का विचार करते समय भाव, अंश, ग्रह दृष्टि, युति की शुभाशुभ स्थिति तथा बलाबल का विचार करने के पश्चात् ही रोग का व उसकी गंभीरता को ज्ञात किया जा सकता है।[9]

प्रथम भाव	मुख, दंत, जीह्वा, मस्तक
द्वितिय भाव	दाहिना नेत्र व कंठ
तृतीय भाव	दांया हाथ, कर्ण, गर्दन
चतुर्थ भाव	हृदय, वक्ष
पचंम भाव	गर्भ व उदर
षष्ठम भाव	पेट, नाभि, गुर्दा
सप्तम भाव	जन्नांग
अष्टम भाव	गुदा
नवम भाव	जंघा
दशम भाव	जानु
एकादश भाव	बांया हाथ, गर्दन, कर्ण
द्वादश भाव	वामनेत्र, पाद

ग्रहों से सम्बंधित रोग :-

1. **सुर्य :-** कुण्डली मे सुर्य यदि प्रभावहीन हो तो जातक क्षय, मंदाग्नि, अर्श (Piles), रक्तचाप, मधुमेह, बुखार (पीलिया), अजीर्ण रोग से संक्रमित होता है।
2. **चन्द्रमा :-** क्षीण चन्द्रमा से नेत्र दोष, आलस्य, प्रमाद (पागलपन), पांडुरोग, जलोदर, कफ, गठिया, मानसिक पीड़ा, हृदय, स्त्रीयों में मासिकधर्म सम्बंधित बिमारियाँ, अण्डकोष व मनोद्वेग से सम्बंधित बिमारियाँ होगी।
3. **मंगल :-** अशुभ या क्षीण मंगल जातक को गर्मी, धातु, ज्वर, रक्त विकार, फोड़े-फुंसी से सम्बंधित बिमारियाँ देता है।
4. **बुध :-** अशुभ बुध जातक को स्नायु, श्वास, वाक्दोष, सिरदर्द, खांसी, दमा, तपेदिक एवं शूल इत्यादि रोगों से ग्रसित करता है।
5. **गुरू :-** जातक के कुण्डली मे अशुभ गुरू होने पर नाक, कान, गले और नजले से सम्बंधित रोग, सूजन, चर्बी जनित विकार, तथा मोटापे की शिकायत रहती है।

9. भारतीय फलित ज्योतिष संहिता/ पृ. 83/ प्रका. मनोज प्रकाशन/ द्वितीय संस्करण, 2006

www.drjitendraastro.com

6. **शुक्र** :- यदि शुक्र अशुभ हो तो जातक प्रमेह रोगी, स्त्री संसर्ग से जनित रोग, मूत्राशय, चक्षु तथा चर्म रोगी होता है।
7. **शनि** :- क्षीण शनि से जातक को अंग भंग, कुष्ठ, वात, लकवा, दमा, उदर, दृष्टि-दोष, हड्डी टुटने से सम्बंधित रोग होते हैं।

रोग, योग व इनसे सम्बंधित कुण्डलियाँ :- ज्योतिष में युगों से शारिरीक व्याधियों के सम्बंध में अनके योगों की चर्चा की गयी है। मस्तिष्क की व्याधियों से लेकर पाँव के तलवों में होने वाले रोग व उनसे बचने के उपाय सुझाये गये हैं। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण योगों की सक्षिप्त चर्चा यहाँ की जा रही है।

दुःस्थानपेनापि युते विलग्ननाथे विलग्ने सति रोगभाकस्यात्।[10]

लग्नेश यदि दुष्ट (त्रिक या मारक) स्वामी से युत होकर पापाक्रान्त हो या त्रिक भावों में विराजित हो तथा दुष्ट स्थानेश (त्रिक भावों के स्वामी) लग्न में हो तो जातक रोगी अवश्य होगा। लग्नेश का जन्मांग में बलहीन होना भी जातक को रोगी बनाता है।

"बर्लैविहीने सति लग्ननाथे रोगभाकस्यात्"।।[11]

परन्तु यदि लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में बली हैं पापाक्रान्त नीचगत या अन्त होकर नहीं होता है तो जातक के रोग ग्रस्त होने की संभावना कम रहती है।-

"लग्नाधे केन्द्रत्रिकोण न तु रोगभाकस्यात्"।।[12]

1. मस्तिष्क रोग :- मस्तिष्क में व्याधि संक्रमण लग्न से लग्नेश व पापाक्रान्त लग्न भाव, व अश्विनी नक्षत्र इत्यादि से जनित होता है। विक्षिप्तता, प्रमाद व स्नायु तन्त्र से सम्बंधित व्याधियाँ इसी के अर्न्तगत आती हैं। शास्त्रानुसार शनि स्नायु तंत्र का आधिपति है अतः यदि शनि द्वितीयेश से युक्त होकर या कुण्डली मे पापग्रहों से युक्त होकर बैठा हो तो उसे वात रोग से जनित प्रमाद (पागलपन) होता है। -

"वाकस्थानपेनापि युतोर्कपुत्रः पार्पेर्युतो वातभयात्प्रमादः।।[13]

---

10. सर्वार्थ चिन्तामणी/ अ. 2/ श्लोक सं. 74/ पृ. 49/ प्रका. खेमराज श्री कृष्णदास, मुम्बई/ संवत् 2060
11. वही द्रष्टव्य
12. वही द्रष्टव्य
13. सर्वार्थ चिन्तामणी/ अ. 3/ श्लोक सं. 115/ पृ. 71/ प्रका. खेमराज श्री कृष्णदास, मुम्बई/ संवत् 2060

www.drjitendraastro.com

2. विस्मृति योग :- बुद्धिजड़ता और विस्मृति योग भी तन्त्रिका तन्त्र से ही सम्बंध रखते हैं। अतः शनि यदि बुद्धि के भाव अर्थात् पंचम भाव में हो, लग्नेश से दृष्टि सम्बंध हो तथा बुद्धि भाव का स्वामी पंचमेश पापाक्रन्त हो तो जातक बुद्धिहीन होता है। यथा -

पंचमे मंदसयुक्ते लग्नेशे मंदवीक्षिते ।
तदीशे पापसंयुक्ते बुद्धिजाडयं समादिशेत्।।[14]

शनि यदि राहु या केतु से युक्त हो पंचम भाव शुभ ग्रहरहित हो तथा पंचमेश पापयुक्त अथवा क्रूरषष्टयंश मे हो तो ऐसे जातक की बुद्धि विस्मरण वाली होती है अर्थात् याद रखने की क्षमता कम होती है। यथा -

मंदमांधगुसंयुक्ते पंचमे शुभवर्जिते।
तदीशे पापसंदृष्टे विस्मृतिः प्रायशो भवेत्।।
बुद्धिर्विस्मृतिपूर्वा स्यात्कारके शुंभसंयुते।
तदीशे पापसंयुक्ते क्रूरषष्टयंशकेपि वा।।[15]

2. चेहरा व मुख रोग :- जातक चेहरे पर घाव (फोड़ा-फुंसी), मुख रोग (दन्त रोग व मूक व्याधि) इत्यादि भी ज्योतिष द्वारा ज्ञात किया जा सकता है। जैसे यदि किसी जातक की कुण्डली मकर लग्न की हो तथा राहु या केतु षष्टभाव में उपस्थित हो तो उसे दन्त रोग होता है।

"षेष्ठे राहु केतु दन्ते धरे वारोगी"
या
"लग्ने गुरू राहु दन्तरोगी"।।[16]

लग्न मे गुरू राहु की युति भी जातक को दन्त रोगी बनाती है। यहाँ जातक की कुण्डली में षष्ठम भावस्थ राहु है अतः जातक को दन्त रोग हुआ है यह स्पष्ट है।

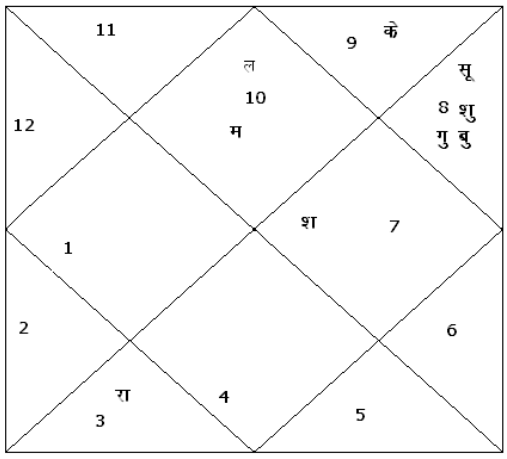

6/12/82 दंत रोगी
11:00 जोध

14. सर्वार्थ चिन्तामणी/ अ. 5/ श्लोक सं. 46/ पृ. 107/ प्रका. खेमराज श्री कृष्णदास, मुम्बई/ संवत् 2060
15. सर्वार्थ चिन्तामणी/ अ. 5/ श्लोक सं. 47,48/ पृ. 107/ प्रका. खेमराज श्री कृष्णदास, मुम्बई/ संवत् 2060
16. जातक तत्वम् / अ. षष्ठम् भाव विचार/ श्लोक सं. 61,62/ पृ. सं. 251

www.drjitendraastro.com

इसी प्रकार यदि लग्नेश या अष्टमेश शनि हो तथा राहु व केतु इनसे युक्त होकर षष्ठ भाव में विराजित हो और उनमें से जो बलवान ग्रह की दशा आयेगी उस दशा में जातक के घाव या फोड़ा-फुंसी आदि का रोग होगा।

3. मूकत्व रोग :- जातक का मूक (गूंगा) होना उसके जन्मांग में पहले से निरूपित होता है। जैसे जिस राशि में राहु व केतु हो उसका स्वामी तृतीयेश बुध के साथ त्रिक भावस्थ है तो जातक गूंगा (मूक) होगा।

"वीर्याधिपे राहुसमेत राशीनान्विते राहुयुते विलग्ने ।
सर्पाद्वयं विक्रमराशिनाथे बुधेन युक्ते गलरोगमत्र।।[17]

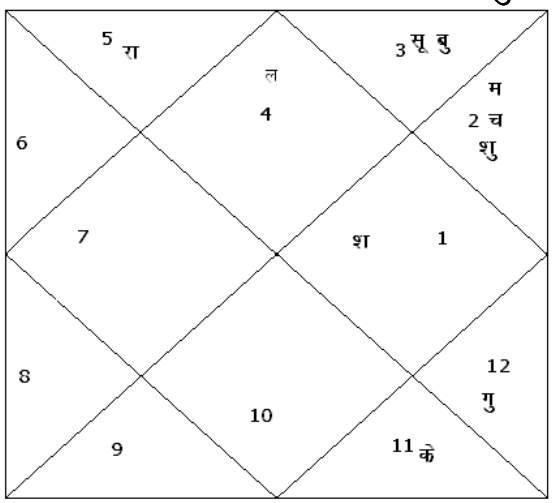

मूकत्व रोग

22/6/98 09:42 जोधपुर

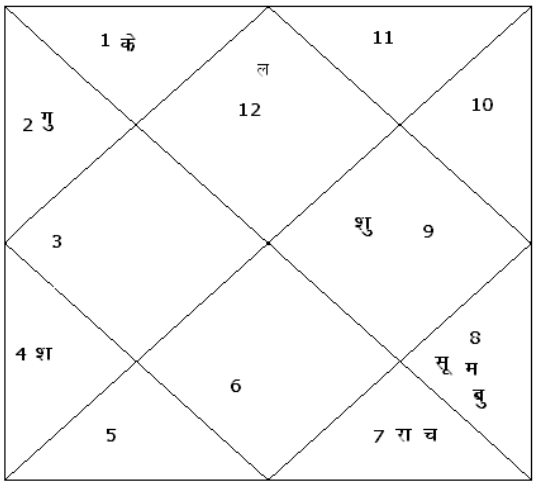

मूकत्व रोग 20/11/76 2:55 पीएम जोध

यदि पंचमेश या गुरू त्रिक भावस्थ हो तो भी जातक गूंगा होता है वह पूर्णतया वाणी हीन होता है। यहाँ प्राप्त कुण्डली में पंचमेश अष्टम भावस्थ है अतः यह योग घटित हुआ है। यथा -

"वाकस्थानेशो गुरूर्वा व्ययरिपुविलय स्थानगो वाग्विहीन"।।[18]

4. बधिर रोग :- कुण्डली में चन्द्रमा व शुक्र अपनी शत्रु राशि या शत्रु ग्रहों से युक्त हो या फिर पाप ग्रहों की दृष्टि उन पर हो तो जातक बधिर (बेहरा) होगा जैसा की उपरोक्त कुण्डली में स्पष्ट है।

---

17. सर्वार्थ चिन्तामणी/ अ. 4/ श्लोक सं. 44/ पृ. 83/ प्रका. खेमराज श्री कृष्णदास, मुम्बई/ संवत् 2060
18. जातक अलंकार/अ. 3/ श्लोक सं. 12/ पृ. 20/ प्रका. चौखम्बा संस्कृत सीरिज, बनारस/ संवत् 2007

"सरिपु पूर्णेदुशुक्रौबधिरः"।।[19]

5. नेत्र रोग व कर्ण रोग :- कालपुरूष कुण्डली के अनुसार द्वितीय व द्वादश भाव क्रमश दांयी व बांयी नेत्र का होता है, अतः यदि दूसरे भाव में क्रूर ग्रह शनि हो तो दक्षिण नेत्र में घात होती है **"मन्देर्थे दक्षनेत्रे घातः"।।**[20] और यदि बाहरवें भाव में मंगल हो तो वामनेत्र में घात होती है **"भौमेन्त्ये वामनेत्रे घातः"।।**[21] कान का भाव कुण्डली में तीसरा होता है अतः तृतीयेश क्रूरषष्टयंश में गया हो तो कान का रोग होगा - **"सोत्थपे क्रूरषष्टयंशे कर्णरोगः"।।**[22]

6. हृदय व्याधि :- पंचम भाव व चतुर्थ भाव मुख्यतया हृदय व्याधि के लिए उत्तरदायी है। यदि चतुर्थ स्थान में या चतुर्थेश पापयुक्त, पापमध्य हो तो जातक के हृदय में रोग होता है, साथ ही चतुर्थ भाव का स्वामी जहाँ बैठा हो उस नवांश का स्वामी क्रूरषष्टयंश मे हो तो हृदय की शल्य चिकित्सा (Surgery) होती है।

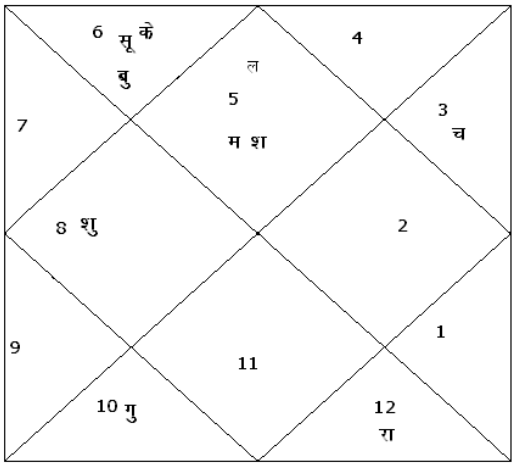

हृदय रोग 15/10/49 02:50 ए एम जोध0

हृदये पापसयुक्ते तदीशे पापसंयुते
पापग्रहाणां मध्यस्थे हृग्दतं रोगमादिरीत्
तदीशस्थांशराशीते क्रूरषष्टयंशसंयुते
क्रूरग्रहेण संदृष्टे हृग्दत शल्यमादिशेत्।
तत्राते नाशभावस्थे नाशस्थानेश संयुते
नीचारिमुण्भावे वा हृग्दतं रोगमादिशेत्।।[23]

उपरोक्त कुण्डली की स्थिति अनुसार चतुर्थेश की षष्ठेश से युति, पंचमेश नीचगत षष्ठम भाव में है अतः उपरोक्त श्लोकानुसार हृदय व्याधि संभव हुई।

---

19. जातक तत्वम् / प्रकरण 3/ श्लोक सं. 269/ पृ. सं. 104
20. जातक तत्वम् / अ. भाव विचार / श्लोक सं. 268/ पृ. सं. 101
21. जातक तत्वम् / अ. भाव विचार / श्लोक सं. 267/ पृ. सं. 101
22. जातक तत्वम् / अ. पंचम भाव विचार/ श्लोक सं. 91/ पृ. सं. 255
23. सर्वार्थ चिन्तामणी / अ.षष्ठम भाव विचार/श्लोक सं. 65-67/ पृ. 109,110

www.drjitendraastro.com

7. उदर व्याधि व गर्भपात :- उदर की शल्य चिकित्सा या स्त्रियों का गर्भपात पचंम भाव से सम्बंध रखता है। आधुनिक काल में Apendix का Operation, Obortion इत्यादि के योग ज्योतिष की दृष्टि से इस प्रकार है। पचंम भाव में पाप ग्रह हो तो उदर व्याधि अवश्य होती है। प्राप्त कुण्डली मे पचंम भावस्थ के कारण उदर व्याधि घटित हुई। परन्तु यदि यह स्थिति स्त्री जन्मांग मे हो तो गर्भपात की सभावना अधिक रहती है। यथा **"सुतै पापयुतेदृष्टे गर्भच्युतिः"**[24] या फिर पचंम भाव में जिस राशि का नवांश हो उस राशि को यदि कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो भी यही परिणाम होगा परन्तु जितने पापग्रह देखते हों उतने ही गर्भ का नाश (पात) होगा। यथा-

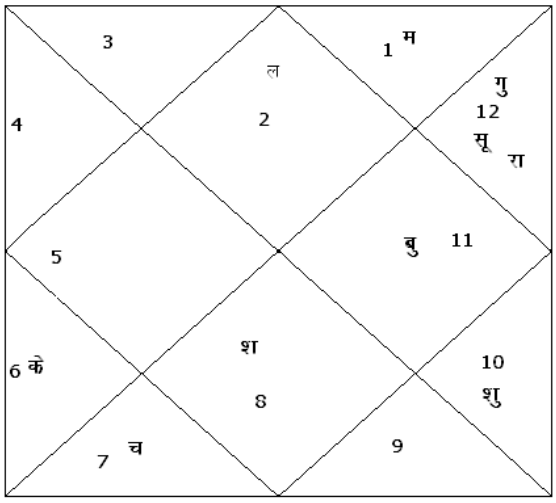

उदर व्याधि 19/3/87 10:38 ए एम जोध

"पुत्रस्थनवांशो यावत्पापदृष्टः शुभादृष्टस्तावद्गर्भपातः"।।[25]

8. नाभि व मूत्रकृच्छ्र रोग :- षष्ठम भाव से नाभि व गुर्दा से सम्बंधित रोगों की चर्चा की जाती है। षष्ठेश यदि तीसरे भाव में स्थित हो तो जातक को नाभ सरकने का रोग होता है- **"सोत्थेरीशे नाभिरोगी"।।**[26] मूत्रकृच्छ्र रोग के लिये चन्द्रमा यदि जल राशि का हो उनका स्वामी छठें भाव में हो या उसे जलराशि मे गया हुआ बुध देखता हो तो मूत्रकृच्छ्र (Diabities) रोग होता है। यथा-

जलभेचन्द्रे तत्पेषष्ठे जलर्क्षग ज्ञदृष्टे मूत्रकृच्छ्ररोगः।।[27] **या**
पापाः षष्ठेवा सप्तमे मूत्रकृच्छ्ररोगः।।[28]

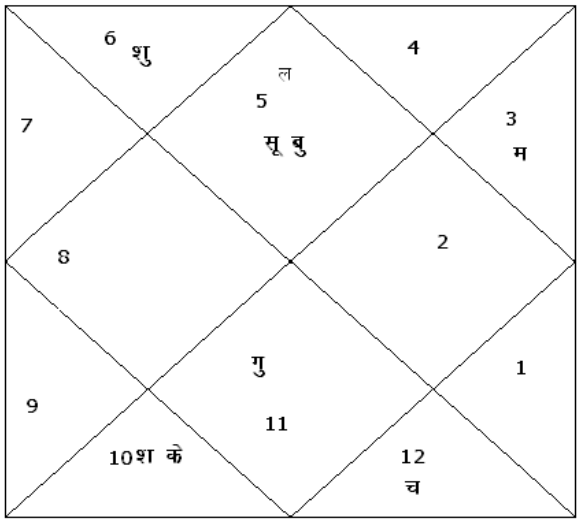

मूत्रकच्छ रोग 19/8/62 6:45 ए एम जोध

यहाँ प्राप्त कुण्डली में षष्ठम भाव में पापग्रह उपस्थित हैं अतः मूत्रकृच्छ्र हुआ।

---

24. जातक तत्वम् / अ. पंचम भाव विचार/ श्लोक सं. 83/ पृ. 220
25. जातक तत्वम् / अ. पंचम भाव विचार/ श्लोक सं. 84/ पृ. 220
26. जातक तत्वम् / अ. षष्ठम भाव विचार/ श्लोक सं. 64/ पृ. 252
27. जातक तत्वम् / अ. षष्ठम भाव विचार/ श्लोक सं. 114/ पृ. 258
28. जातक तत्वम् / अ. षष्ठम भाव विचार/ श्लोक सं. 116/ पृ. 258

www.drjitendraastro.com

9. अर्श रोग - अर्श (Piles) रोग गुदा से सम्बंधित होता अतः अष्टमेश यदि सप्तम भाव मे हो उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि ना हो तो जातक को गुदा से सम्बंधित रोग होता है। यथा -**"द्यूनेरध्रेरो क्रूरे शुभादृष्टेऽर्शसः"।।**[29]

- **व्याधियों की ज्योतिषिय चिकित्सा :-** ज्योतिर्विज्ञान मानव शरीर सम्बंधी व्याधियों को समझने व उनका समय रहते उपचार करने का सुलभ एवं प्रमाणिक मार्ग प्रस्तुत करता है, जिसके आधार पर जातक अपनी नकारात्मक, जन्मजात व संभावित व्याधियों का उपचार कर सकता है। अनिष्ट ग्रहों से उत्पन्न व्याधियों का उपचार या अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिये ज्योतिष व कर्मज्ञो ने प्रधान रूप से मंत्र, तंत्र, मणि (इत्यादि) और औषधि उपचार की व्यवस्था प्रस्तुत की है। इनमें मंत्र का आश्रय लेना सर्वोपरि और उपयुक्त सामाधान है। मंत्र स्वयं ही एक संपूर्ण और समर्थ विज्ञान है। मंत्र का शाब्दिक अर्थ है **"मननात् त्रायते"।।**[30] मनन करने से जो त्राण करे अतः स्पष्ट है ग्रह शान्ति के लिए किया गया मांत्रिक अनुष्ठान वस्तुतः विगत जीवन के उस अपकर्म का प्रायश्चित है, जो संबधित ग्रह की विष किरणों के माध्यम से हमें वर्तमान में पीड़ित करता है। मंत्र के माध्यम से हम ग्रह की शुभ रश्मियों का आह्वन करते हैं।

ग्रह शान्ति का सर्वोत्तम उपाय मंत्र जप ही है, तथापि जो लोग इसमें कठिनाई अनुभव करते है उन्हें संबधित ग्रह के वार का व्रत, औषधि स्नान, जड़ी धारण एवं दान का विधान अपनाना चाहिए, रत्नों का भी चमत्कारिक प्रभाव होता है। शास्त्रों में कहा गया है।

गोचरे वा विलग्ने वा ये ग्रहारिष्ट सूचकाः
पूजयेतान प्रयत्नेन पूजिता स्युः शुभप्रदाः।।

अर्थात् "गोचर या जन्म पत्र में जो अनिष्ट सूचक ग्रह हैं उनकी यत्नपूर्वक पूजा करनी चाहिए जिससे पूजित ग्रह शुभ प्रद हो जाते हैं।[31] रत्न व मंत्र चिकित्सा को व्याधियों के उपचार हेतु सर्वोत्तम माना गया है। वेदों में अनेक जगह 'रत्न' शब्द आया है।[32] मणि का अर्थ ऋग्वेद में ताबीज की तरह पहनने वाले रत्नों से है। वैदिक काल में अशुभ की निवृत्ति हेतु मणि (रत्न) धागे में पिरोकर गले में पहने जाते थे।[33] उत्तम रत्न ऋद्धि-सिद्धिदायक देने वाले तथा सदोष रत्न दरिद्रता देने वाले होते हैं। सूर्य ग्रह के प्रकोप से बचने के लिए माणक (पद्मराग), चन्द्रमा के लिए मोती, मंगल के लिए मूंगा (प्रवाल) बुध के लिए पन्ना, गुरू- पुखराज, शुक्र- हीरा, शनि-नीलम, राहु व केतु के प्रकोप तथा उनसें सम्बंधित व्याधियों के निराकरण के लिये क्रमशः गोमेद व वैदूर्य (लहसनिया) पहनना चाहिए।[34]

---

29. जातक तत्वम् / अ. षष्ठम भाव विचार/ श्लोक सं. 140/ पृ. 261
30. शब्दकल्पद्रुम/खण्ड 3/पृ. 617/प्रका. MLBD, पटना/प्रकाशन 1961
31. अनिष्ट ग्रह चिकित्सा/ पृष्ठ संख्या 11/ प्रका. मेघ प्रकाशन / संस्करण 2001, दिल्ली
32. अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्नधातारम्/ऋग्वेद/1/1/1
33. रत्न परीक्षादि सत्वग्रह संग्रह/पृ. 11/प्रका. रा.प्रा.वि.प्रति., जोधपुर/प्रकाशन 1961
34. रत्न परीक्षादि सत्वग्रह संग्रह/पृ. 12/प्रका. रा.प्रा.वि.प्रति., जोधपुर/प्रकाशन 1961

www.drjitendraastro.com

वराहमिहिर[35] के अनुसार मोती पहनने से मनुष्य के सभी रोग, शोक व चिन्ताएं दूर होती हैं। यथा-

"एतानि सर्वाणि महागुणानि सुतार्थ
सौभाग्यशस्कराणि रूक शोकहन्तृणि च पार्थिवाना"।।

और वह मनोवांछित फल प्राप्त करता है। गजमुक्ता (मोती) के धारण से विजय, पुत्र प्राप्ति व आरोग्य भी प्राप्त होता है।[36] बालारिष्ट से बचने के लिये भी मोती धारण किया जाता है। ऐसा ऋषि पाराशर ने वृहद् पाराशर हौरा शास्त्र के अ.9 श्लोक सं. 43 में कहा है- **भानुः पिता च जन्तुनां चन्द्रो माता तथैव च।** मंत्र द्वारा भी जातक अपनी व्याधियों का उपचार करता है शास्त्रानुसार कहा गया है-

"मननात् त्रायते यस्मात्तस्मान्मंत्र प्रकीर्तित यथा ज्वरादिनाशकः मन्त्रः"।[37]

अर्थात् निरन्तर मनन (जप) करने से मनुष्यों का कल्याण हो तथा मनुष्यों तथा मनुष्य को त्रिविध, ताप, दोष, ज्वर व पीड़ा से शान्ति मिले वही मंत्र कहलाते हैं। शास्त्रकार कहते हैं कि जब व्याधि (रोग या बाधा) की चिकित्सा, औषध व अन्य उपायों से नहीं होती तब विद्वान लोग उसे कर्मज व्याधि, कर्मज रोग व कर्मज बाधा मानते हैं। हम कर्मज व्याधि का समाधान पुण्यकर्म, भेषज एवं शान्ति कर्मो से होता है। यथा-

"न शमं याति यो व्याधिः ज्ञेयकर्मजो बुधः।
पुण्यश्चभंषचे शान्तस्ते ज्ञेयाः कर्मदोषजाः।।[38]

शान्ति कर्म करने से भी किसी ग्रह से जनित बाधा, उस ग्रह का बुरा फल दूर हो जाता है। धार्मिक अनुष्ठान व यज्ञादि कर्मो को ही "शान्तिकर्म" कहते हैं इनसे ही सभी अमंगल (व्याधियाँ) दूर होता है।[39] जो अनुष्ठान आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक उपद्रव शान्त करने के लिए किये जाते हैं वह भी "शान्तिकर्म" कहलाते हैं।[40] वराहमिहिर[41] ने शिवालय की भूमि पर गोदोहन और कोटिसंख्यक (रूद्र) हवन से दिव्य उत्पातों की शान्ति का विधान बतलाया है तो सूर्य या भौमादि ग्रहों की शान्ति की तो बात ही क्या ? अर्थात् जातक की शारिरीक व मानसिक व्याधियाँ (ग्रहजन्य उत्पात) व अन्तरिक्ष उत्पात भी हवन से निश्चय ही शान्त हो जाते हैं।

"दिव्यमपि शममुपैति प्रभूनकनकात्रगोमहीदानैः।
रूद्रायतने भूमौ गोदोहात् कोटिहोमाच्य।।"

अतः औषध के पश्चात् मंत्र, रत्न व यंत्र द्वारा किसी भी प्रकार की शारिरीक व्याधि का उपचार संभव है। ज्योतिष सिर्फ भविष्य में होने वाली व्याधियों के सन्दर्भ में ही नहीं बतलाता अपितु उनके उपचार भी सुझाता है।

---

35. वृहत्संहिता/अ. 81/श्लोक 30/प्रका.भारतीय विद्या प्रकाशन/ प्रकाशन 2006
36. वृहत्संहिता /अ. 81/श्लोक 27/ पृ. 494
37. शब्दकल्पद्रुम/खण्ड 3/पृ. 617/प्रका. MLBD, पटना/प्रकाशन 1961
38. योगरत्नाकर/खण्ड 1 व 2/प्रका. वामन शास्त्री पेंडके/प्रकाशन 1973/नागपुर
39. संस्कृत शब्दार्थ कोस्तुभ/ पृ.105/प्रकाशन 1961/ खेमराज श्री कृष्णदास, मुम्बई
40. हिन्दु धर्मकोश/पृ.626/प्रका. उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ/प्रकाशन 1978
41. वृहत्संहिता /अ. 46/श्लोक 5 व 6/ पृ.97/ प्रका. भारतीय विद्या प्रकाशन/ प्रकाशन 2006

www.drjitendraastro.com

(Apendix)

नक्षत्रों से सम्बंधित अंग व रोग :-

S.No.	नक्षत्र	सम्बंधित अंग	योग
1.	अश्विनी	सिर, प्रमस्तिष्कीय गोलार्द्ध	मिरगी (अपस्मार), लकवा, अनिद्रा, तन्त्रिका शोथ मस्तिष्क पर चोट, तन्त्रिकावसाद
2.	भरणी	सिर (द्वितीय गोलार्द्ध) (सेरेब्रल हैमिस्पीय)	दृष्टि पर प्रभाव, जुकाम, श्लेष्मा प्रवृति (साईनस) धमनियों का विचार, रतिरोग अस्वस्थता
3.	कृतिका	आखें, दृष्टि भाग (कार्निया) गर्दन, चेहरा, कण्ठनली (टॉसिन्ल)	विस्मृति, तेज या मियादी ज्वर (मलेरिया, फाईलेरिया) छाहयॉ, मुंहासे, दृष्टिदोष, गले की खराबी, गर्दन पर सूजन
4.	रोहिणी	मुंह, जीभ, तालु, कशेरूक, अनुमस्तिष्क शीर्षप्रभाग	शीत, पाव का दर्द, वक्षस्थल की पीड़ा, अनियमित मासिक धर्म
5.	मृगशिरा	स्वरतन्त्री, कन्धे, बाहु कर्ण, बाल्यग्रन्थी, चिबुक	रक्तविकार, हाथ का फ्रेकचर, ग्रीवास्थी का विच्छेद, हृदयप्रवाह, कन्धे की हसुंली के आस-पास का दर्द
6.	आर्द्रा	मछलियाँ, कन्धे,गला, कर्ण	गले में सूजन, कर्णमूल, अस्थमा, शुष्क खांसी, कान मे मवाद, कर्ण रोग मतिभ्रम, ग्रासनलिका विकार
7.	पुनर्वसु	छाती का ऊपरी भाग, अग्राशय, स्तनों का अग्र भाग, तन्तुकोष्ठ अन्त: स्वसनीय प्रणाली, पेट का ऊपरी भाग	जलोदर, टी.बी., अजीर्ण, मन्दाग्नि, निमोनिया, श्वासनली का शोध, पेट की गड़बड़ी, अनियमित आहार
8.	पुष्य	फेफड़े, उदर और आंते	क्षय, अल्सर, गेस्ट्रिक, अल्सर, पित, अश्मरी, जुगुप्सा, मिचली, ऊबकीई, चर्बी (वसा), कैन्सर, पायरिया, पीलिया
9.	आश्लेषा	तन्तुदर, अग्नाशय, लीवर फेफड़े	वायु विकार अग्नाश्य में, नर्वसनैस, कफ, शीत व ठण्डा पैर, वायुगोला, वृक्कशोथ, आमवात
10.	मघा	पीठ, सुषुम्ना नाड़ी, मेरूरज्जु, हृदय, तिल्ली	हद्वय के अत्यधिक व अकस्मात् सपन्दन, पीठ का दर्द, कालरा, मूर्छा सुषुम्ना नाड़ी में तन्त्रिका शोथ, पागलपन, प्रत्यावहन, उद्गिरण, प्रतिक्षेपण, अनुदात गुर्दा
11.	पू.फा.	तरगंन भाग, नाड़ी, रक्त	नाड़ी रोग, नाड़ीयों में वक्रता, रक्त क्षीणता या अरक्तता (ऐनिमिया)
12.	उ.फा.	स्पाइनलकोर्ड, यकृत, पेट, लीवर, आंते	मस्सा, दिमागी उद्भ्रान्ति, शूलोदर, पीठदर्द, सिरदर्द

www.drjitendraastro.com

13.	हस्त	बृहद् आंत्र, स्त्राव ग्रन्थि, किण्वन (एन्जाईम)	आंतो मे दर्द, भगन्दर, भ्रमजाल, मूत्ररोग, सांस की समस्या, टाइफाइड, दस्त,
14.	चित्रा	पेट के नीचे भाग, गुर्दा, वाहिका प्रेरक प्रणाली, कमर, उण्डुकपुच्छशोथ	शुश्क गरोड़ा, पेट की समस्या, वस्ति का किडनी से सकुंचन, किडनी व मूत्राशय सम्बंधिरोग, पथरी, बहुमूत्ररोग, मूत्रवाहिनी में जलन।
15.	स्वाति	त्वचा, हार्निया, वस्ति, मूत्राशय	कुष्ठरोग, त्वचाविकार, गर्भाशय का अल्सर, चकते पड़ जाना।
16.	विशाखा	जननेन्द्रिय, मलाशय अंग, प्रोस्टेट ग्रन्थि, सत्रांस	मधुमेह, कोमा, चक्कर आना, अधिवृक्क का सकुंचन, गर्भाशय व जननेन्द्रिय सम्बंधी रोग, हार्निया आंत्रवृद्धि, मूत्राशय का ट्यूमर, आकृति दोष।
17.	अनुराधा	ब्लेडर, गुप्तांग, नेसल्स हड्डी	स्त्रियों को मास कष्ट, बलगम, गठिया, सन्तिपात, पाईल्स (अर्थ)
18	ज्येष्ठा	लिंग/योनि, डिम्बग्रन्थि अण्डाशय, कोख	बवासीर, मस्सा, गुप्तांगों में रोग, भुजाओं का दर्द, रक्तस्त्राव
19.	मूल	नितम्ब, जघांए, श्रोणिफल, नितम्बाग्र, नाड़ियाँ	गतिविषयक विरमित, कटिवाल, चलने फिरने मे कष्ट।
20.	पूर्वाषाढा	त्रिकधमंनिया आसन प्रत्यासन कम्पनशील प्रभाग, संचार ग्रन्थियाँ, नितम्ब	विक्षिप्तता, सन्धिवाद, रक्त का सड़ना, घुटनों के उपर सुजन झुरियाँ।
21.	उ.षाढा	घुटने, घुटने की टोपी, पाद सन्धि, धमनियाँ	साईटिका, अस्थिभंग, एग्जिमा, हृदय स्पन्दन, चक्षुपीड़ा।
22.	श्रवण	लसीकावाहिनी, घुटने के नीचे का भाग, वृहत्नाड़ी, चर्म	कुष्ठ, सन्निपात, वायुगुल्म, फाईलेरिया, मवाद बनना।
23.	घनिष्टा	घुटने की अस्थियाँ, मध्य, पृष्ठ भाग, जोड़ व वृहद् अस्ति	लगड़ापन, अंगछेदन, हृदयगति का अचानक रूकना।
24.	शतभिषा	घुटनों व एड़ियों के मध्य का भाग, पिण्डलीयों की मछलीयॉ	फ्रैक्चर, गठिया, हृदय स्पन्दन
25.	पू. भाद्रपद	टखने, नाड़ीभाग, टखनों का मास पूंज	अपसन्यास, पाँव सफेद पड़ जाना, टखनों की सुजन, पाँव में पसिना आना, पाँव में टेढापन।
26.	उ. भाद्रपद	पाँव, पाँव की नसे, पाँव की नाड़ियॉ	गठिया, पाँव में पसीना, सुन पड़ जाना, ठंडे पाँव, चोट, पाँव में बिन्दुपाती, फ्रेक्चर
27.	रेवती	पाँव एवं एड़ी, पंजा, पाँव के तलुए	पाद विकृति, थकान पाँव की सुजन या पीड़ा, पाँव का गाउट

www.drjitendraastro.com